Perfectionism

हम अपने जीवन का जो भी चरम लक्ष्य मान ले, उसे एकबारगी प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा संपूर्ण जीवन उसी ओर लगा रहता है और हम क्रमशः उसे सिद्ध करते है। इसलिए जिस प्रकार अन्य पदार्थों का विकास होता है, उसी प्रकार नैतिक जीवन का भी विकास होता है। यह विकास किस ओर होना चाहिए? यह नैतिक आदर्श या लक्ष्य क्या हो, जिस ओर हम प्रगति करें?

बाह्य नियमवाद (external law) के अनुसार बाह्य सत्ता के नियमों का पालन ही नैतिक आदर्श है। पर यदि बाह्य नियमों का डर और प्रलोभन से पालन किया जाए तो उससे नैतिकता का विकास नहीं होता। इसके अतिरिक्त वे नियम भी तो किसी आदर्श का ही संकेत करते हैं। चरम आदर्श क्या होना चाहिए यह उस नियम से स्पष्ट नहीं होता।

काण्ट का बुद्धिवाद और सुखवाद दोनों एकांगी है। एक के अनुसार बुद्धि का विकास और दूसरे के अनुसार भावना-ओं के विकास में ही नैतिकता बतलायी गयी है। इसलिए एक ने भावनाओं का दमन कर केवल बुद्धि के आदेशों

का पालन नैतिकता कहा है और दूसरे ने बुद्धि को छोड़ भावनाओं की तुष्टि को जीवन का आदर्श बताया है। पर क्या बुद्धि और भावना में से किसी एक को छोड़ा जा सकता है? क्या उनमें से केवल किसी एक के विकास से पूर्ण विकास होगा?

आत्मपूर्णतावाद (Perfectionism) के अनुसार बुद्धि और भावना दोनों ही मनुष्य के आवश्यक अंग हैं। इसलिए बिना बुद्धि के या बिना भावना के मनुष्य पूर्ण नहीं हो सकता। बुद्धि और भावना में आवश्यक संबंध है। इसलिए दोनों का विकास अर्थात संपूर्ण स्व (self) का विकास ही शुभ है। मनुष्य के जीवन का यही चरम लक्ष्य होना चाहिए। संपूर्ण स्व (self) की पूर्णता या विकास का अर्थ है मनुष्य की सभी क्रियाओं की पूर्णता। मनुष्य की क्रियाएँ आत्मिक और बौद्धिक दोनों होती हैं। अरस्तू ने कहा भी है कि मनुष्य एक पशु है, पर विवेक युक्त। उसका स्वभाव रागात्मक और विवेकयुक्त दोनों है। अतः इस मत के अनुसार संपूर्ण आत्मा की पूर्णता ही उच्चतम शुभ (highest good) है।

उपयुक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि आत्मपूर्णता मनुष्य के व्यक्तित्व पर जोर देती है। अपने व्यक्तित्व को विकसित कर पूर्ण बनाना ही जीवन का चरम लक्ष्य होना चाहिए। इसी कारण से इस मत को व्यक्तित्व का नीतिशास्त्र कहा जाता है।

आत्मपूर्णता आत्म-सिद्धि (self-realisation) के द्वारा प्राप्त होती है, अतः यही नैतिक आदर्श है। आत्म-सिद्धि मनुष्य की हर प्रवृत्ति को तुष्ट करने से ही संभव है।